मटके में चाँद

गोपिनी करुणाकर

चित्र
नीलिमा शेख

मटके में चाँद

गोपिनी करुणाकर

चित्र
नीलिमा शेख

अँग्रेज़ी से अनुवाद
लोकेश मालती प्रकाश

श्रृंखला सम्पादक
सुशील शुक्ल

एकलव्य

गुडव्वा ने छत से टँगे हुए मटके में से चाँद को निकालकर उसे आसमान में टाँग दिया। चारों तरफ चाँदनी बरसने लगी।
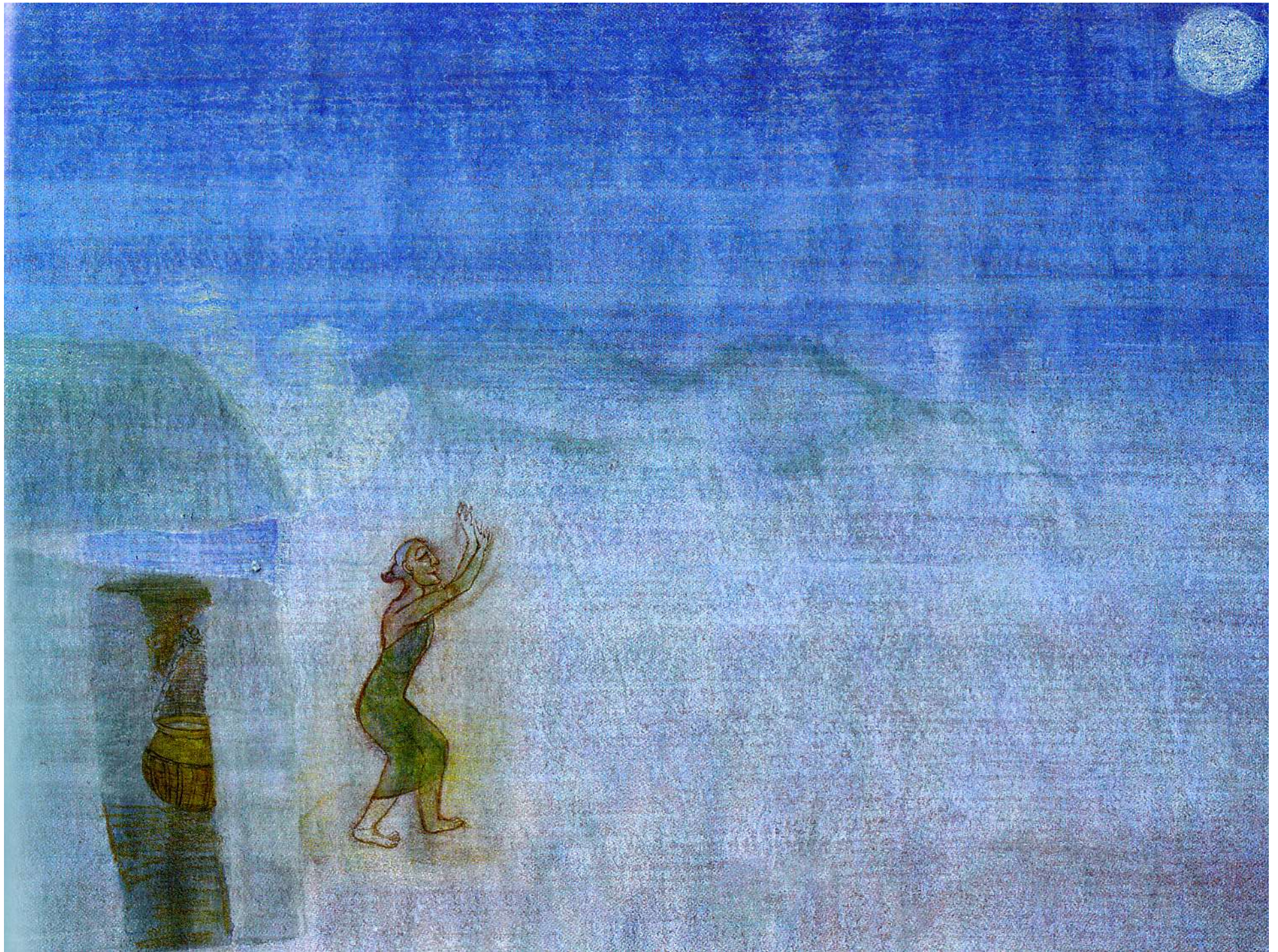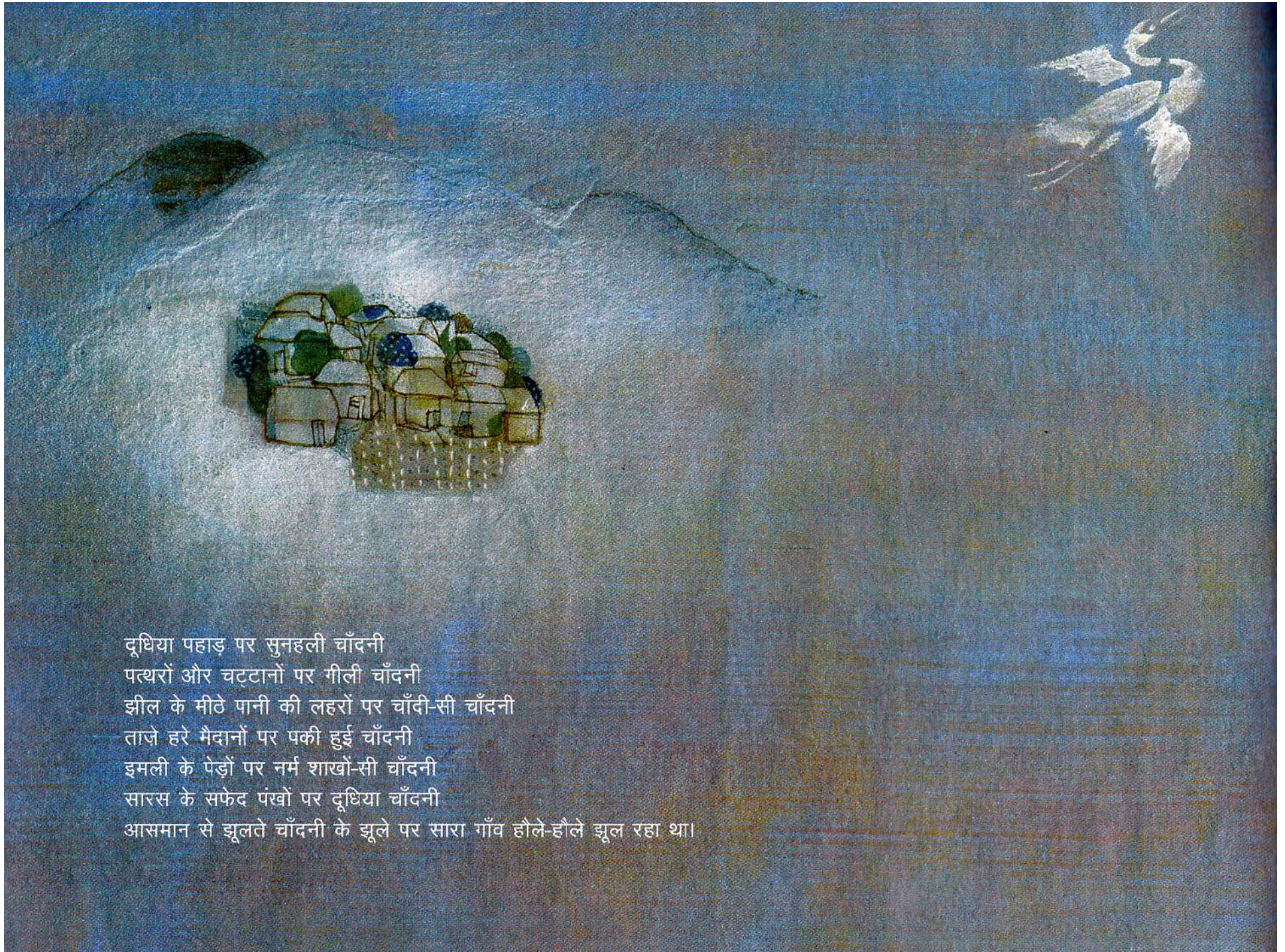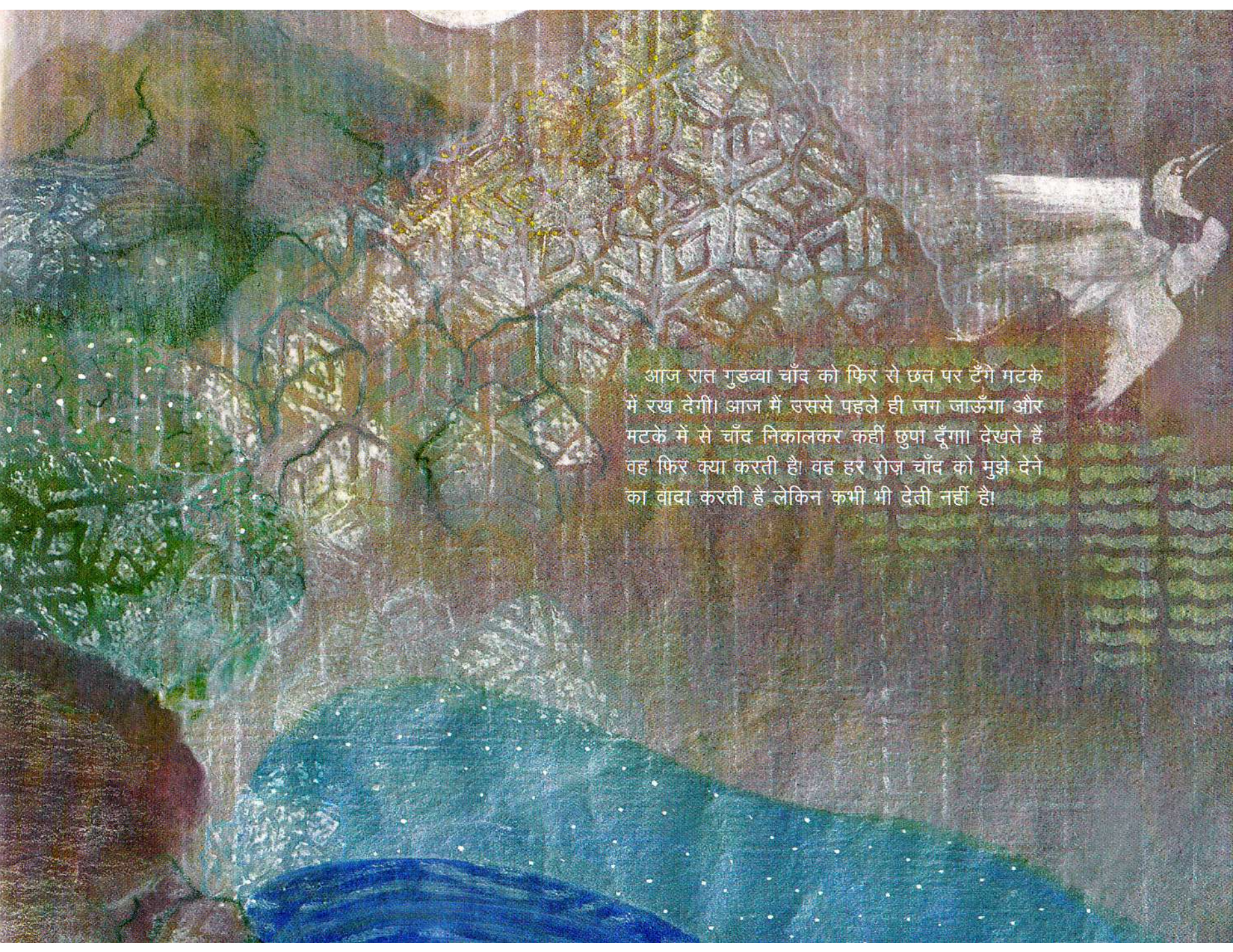
दूधिया पहाड़ पर सुनहली चाँदनी
पत्थरों और चट्टानों पर गीली चाँदनी
झील के मीठे पानी की लहरों पर चाँदी-सी चाँदनी
ताज़े हरे मैदानों पर पकी हुई चाँदनी
इमली के पेड़ों पर नर्म शाखों-सी चाँदनी
सारस के सफेद पंखों पर दूधिया चाँदनी
आसमान से झूलते चाँदनी के झूले पर सारा गाँव हौले-हौले झूल रहा था।

आज रात गुडव्वा चाँद को फिर से छत पर टँगे मटके में रख देगी। आज मैं उससे पहले ही जग जाऊँगा और मटके में से चाँद निकालकर कहीं छुपा दूँगा। देखते हैं वह फिर क्या करती है। वह हर रोज़ चाँद को मुझे देने का वादा करती है लेकिन कभी भी देती नहीं है।

गर्मी के दिनों में एक शाम बहुत बारिश हुई।

उस रात हमारे घर के पिछवाड़े में लगे पलाश के पेड़ पर तारे खिल गए।

मेरा छोटा भाई पीरुबाबू, मेरी छोटी बहन वसन्ता और मैं पेड़ के नज़दीक गए।

पेड़ सितारों से जगमगा रहा था। वसन्ता आँखें फाड़े उसे देख रही थी। अपने मुँह पर हाथ रखकर वह बड़े रोमांच से बोल उठी, "ओयम्मा! इतने सारे तारे!" मैंने पेड़ की एक डाली को पकड़कर हिलाया। उस पर लगे सितारे फूलों की तरह ज़मीन पर गिर पड़े। हमने उन सितारों को अपने कपड़ों में इकट्ठा किया और गुडव्वा की तरफ दौड़ पड़े। (हम उसे गुडव्वा कहते हैं क्योंकि उसकी सिर्फ एक ही आँख थी)। हमारे बालों व कपड़ों में सितारे जगमगा रहे थे। हम ऐसे चमक रहे थे मानो हमने अपने बालों में फूलों की तरह सितारे लगा लिए हों और सितारों से जड़े बुशर्ट व फ्रॉक पहने हुए हों! अपने फ्रॉक पर लगे सितारे दिखाते हुए वसन्ता ने कहा, "अव्वा! यह देखो! इतने सारे तारे!" "अच्छा! मगर ये तो तारे नहीं हैं। ये तो जुगनू हैं," गुडव्वा ने कहा। "जुगनू! ये क्या होते हैं, अव्वा?" मैंने पूछा।

"मेरे पास आओ। मैं बताती हूँ," गुडव्वा ने कहा। हम सब उसके पास बैठ गए।

हमने जुगनुओं को हवा में उछाल दिया और वे अरगनी पर सूखती दादी की साड़ी पर जाकर बैठ गए। गुडव्वा हमें जुगनुओं की कहानी सुनाने लगी।

"बात यह है कि चाँद आसमान पर बिना रुके लगातार रगड़ता रहता है जिसके चलते उसके कण नीचे ज़मीन पर गिरते रहते हैं। असल में यह जुगनू और कुछ नहीं वही कण हैं।"

"एक बार सुनहली गौरैया का एक झुण्ड स्वर्ग गया और भगवान से अपील की। तुम्हें पता है उन्होंने भगवान से क्या कहा? उन्होंने कहा, 'हे सर्वशक्तिमान! जब रात होती है तब इन्सान अपने घरों में दिए जलाते हैं; कोबरा नाग के फन पर मणि जगमगाती है; उल्लुओं की उभरी आँखें ही उनके लिए दिए का काम करती हैं मगर हमारे घोंसलों में अँधेरा छाया रहता है। हम अपने घोंसलों में उजियारा करें तो कैसे? हमारे छोटे-छोटे बच्चे हैं। हम पर रहम करो!'"

भगवान उनकी याचनाओं से पिघल गया। उसने कहा, "चाँद आसमान से इतने समय से रगड़ खा रहा है। उसके कण चारों तरफ बिखरे हुए हैं। तुम लोग इन कणों को इकट्ठा करके अपने घोंसलों में लगा लो। इससे तुम्हें रोशनी मिलेगी।"

"उसके बाद से गौरैया हमेशा अपने घोंसलों में नर्म मिट्टी की लिपाई करती है ताकि उस पर चाँद के कणों को चिपका सके। तो सुनहली गौरैया के घोंसलों के अन्दर जो दीये हैं वे ये जुगनू ही हैं," गुडव्वा ने कहा।
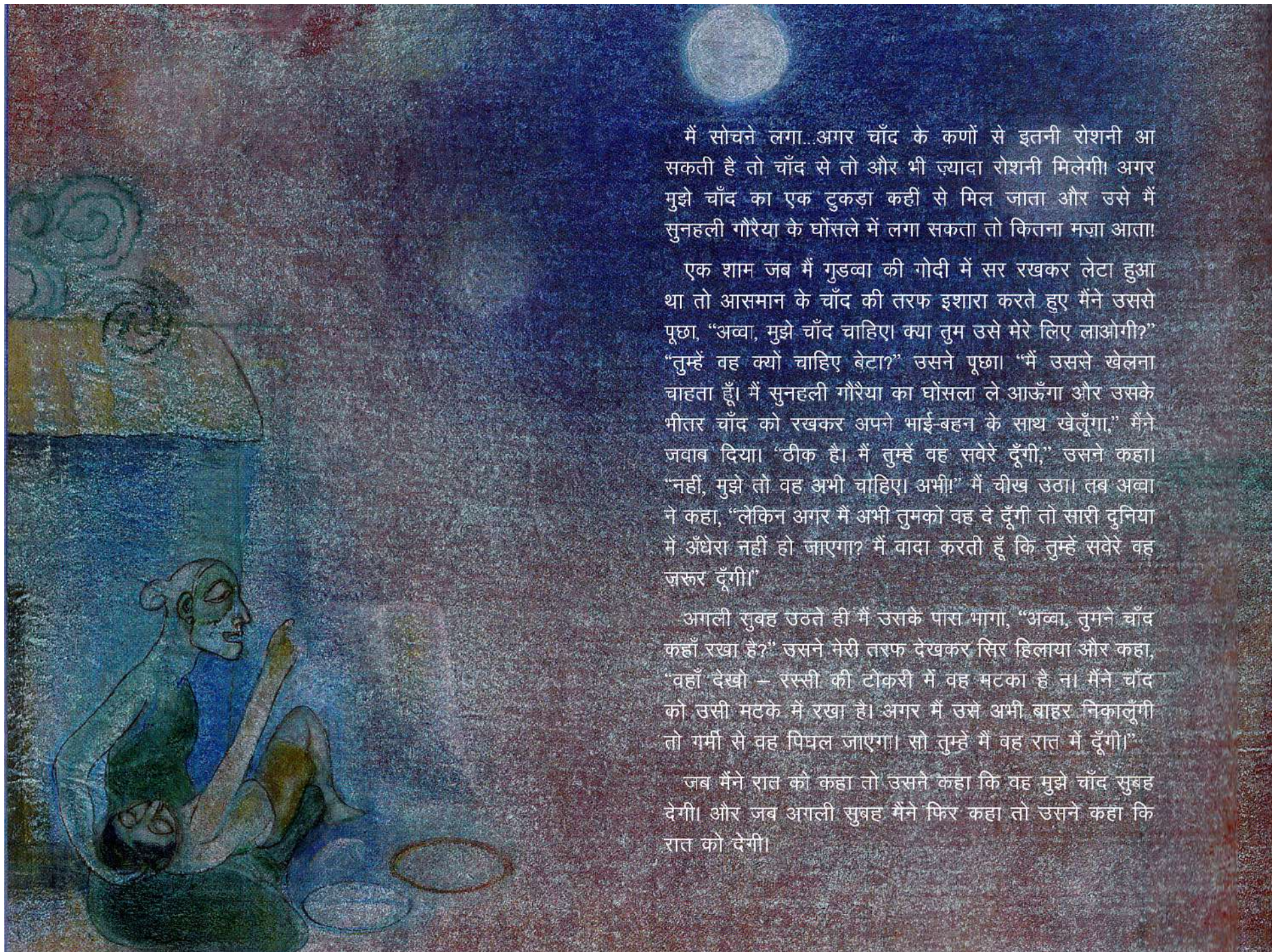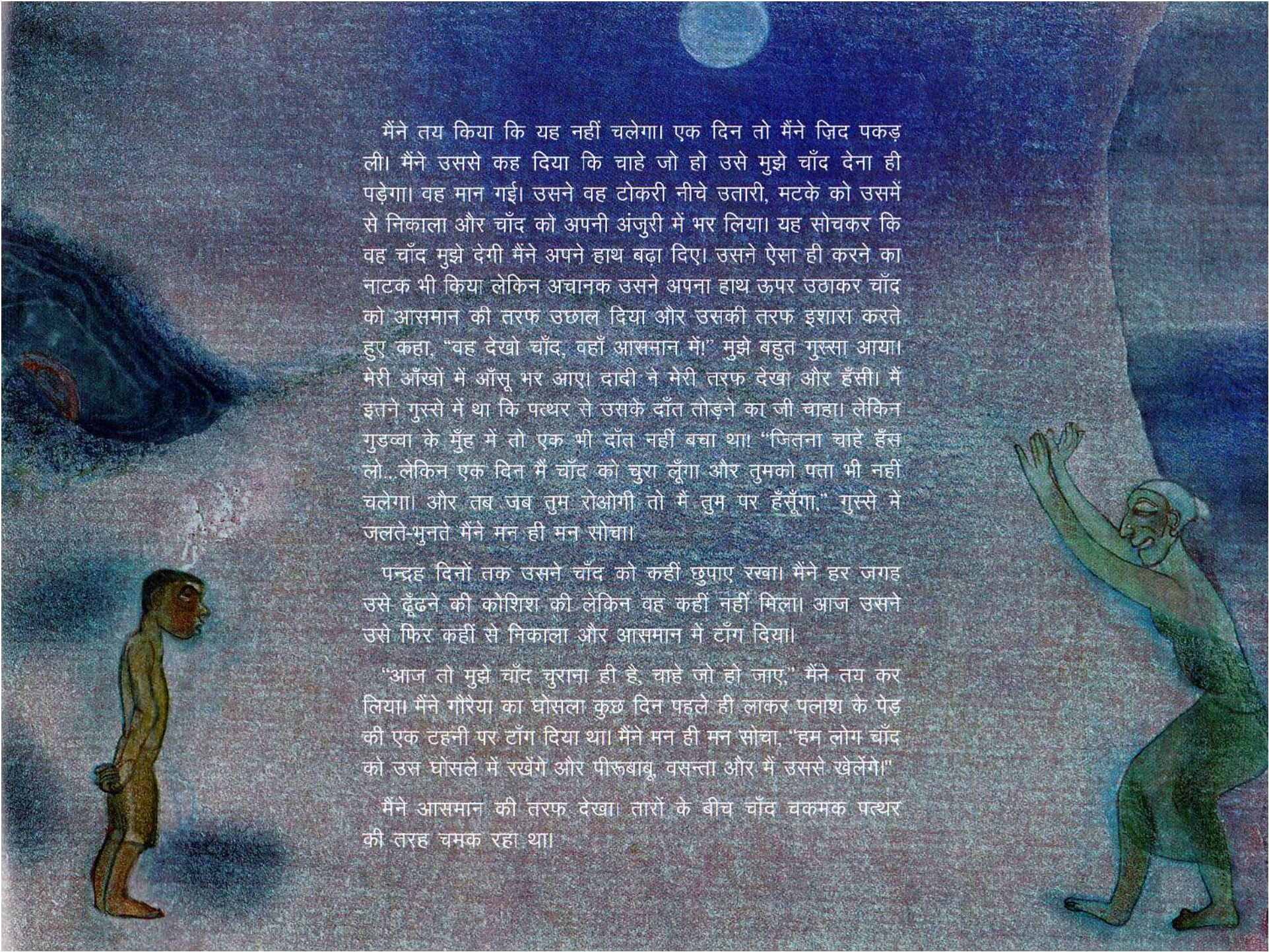
मैं सोचने लगा...अगर चाँद के कणों से इतनी रोशनी आ सकती है तो चाँद से तो और भी ज़्यादा रोशनी मिलेगी! अगर मुझे चाँद का एक टुकड़ा कहीं से मिल जाता और उसे मैं सुनहली गौरैया के घोंसले में लगा सकता तो कितना मज़ा आता!

एक शाम जब मैं गुडव्वा की गोदी में सर रखकर लेटा हुआ था तो आसमान के चाँद की तरफ इशारा करते हुए मैंने उससे पूछा, "अव्वा, मुझे चाँद चाहिए। क्या तुम उसे मेरे लिए लाओगी?" "तुम्हें वह क्यों चाहिए बेटा?" उसने पूछा। "मैं उससे खेलना चाहता हूँ। मैं सुनहली गौरैया का घोंसला ले आऊँगा और उसके भीतर चाँद को रखकर अपने भाई-बहन के साथ खेलूँगा," मैंने जवाब दिया। "ठीक है। मैं तुम्हें वह सवेरे दूँगी," उसने कहा। "नहीं, मुझे तो वह अभी चाहिए। अभी!" मैं चीख उठा। तब अव्वा ने कहा, "लेकिन अगर मैं अभी तुमको वह दे दूँगी तो सारी दुनिया में अँधेरा नहीं हो जाएगा? मैं वादा करती हूँ कि तुम्हें सवेरे वह ज़रूर दूँगी।"

अगली सुबह उठते ही मैं उसके पास भागा, "अव्वा, तुमने चाँद कहाँ रखा है?" उसने मेरी तरफ देखकर सिर हिलाया और कहा, "वहाँ देखो – रस्सी की टोकरी में वह मटका है न। मैंने चाँद को उसी मटके में रखा है। अगर मैं उसे अभी बाहर निकालूँगी तो गर्मी से वह पिघल जाएगा। सो तुम्हें मैं वह रात में दूँगी।"

जब मैंने रात को कहा तो उसने कहा कि वह मुझे चाँद सुबह देगी। और जब अगली सुबह मैंने फिर कहा तो उसने कहा कि रात को देगी।

मैंने तय किया कि यह नहीं चलेगा। एक दिन तो मैंने ज़िद पकड़ ली। मैंने उससे कह दिया कि चाहे जो हो उसे मुझे चाँद देना ही पड़ेगा। वह मान गई। उसने वह टोकरी नीचे उतारी, मटके को उसमें से निकाला और चाँद को अपनी अंजुरी में भर लिया। यह सोचकर कि वह चाँद मुझे देगी मैंने अपने हाथ बढ़ा दिए। उसने ऐसा ही करने का नाटक भी किया लेकिन अचानक उसने अपना हाथ ऊपर उठाकर चाँद को आसमान की तरफ उछाल दिया और उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा, "वह देखो चाँद, वहाँ आसमान में!" मुझे बहुत गुस्सा आया। मेरी आँखों में आँसू भर आए। दादी ने मेरी तरफ देखा और हँसी। मैं इतने गुस्से में था कि पत्थर से उसके दाँत तोड़ने का जी चाहा। लेकिन गुडव्वा के मुँह में तो एक भी दाँत नहीं बचा था! "जितना चाहे हँस लो... लेकिन एक दिन मैं चाँद को चुरा लूँगा और तुमको पता भी नहीं चलेगा। और तब जब तुम रोओगी तो मैं तुम पर हँसूँगा," गुस्से में जलते-भुनते मैंने मन ही मन सोचा।

पन्द्रह दिनों तक उसने चाँद को कहीं छुपाए रखा। मैंने हर जगह उसे ढूँढने की कोशिश की लेकिन वह कहीं नहीं मिला। आज उसने उसे फिर कहीं से निकाला और आसमान में टाँग दिया।

"आज तो मुझे चाँद चुराना ही है, चाहे जो हो जाए," मैंने तय कर लिया। मैंने गौरैया का घोंसला कुछ दिन पहले ही लाकर पलाश के पेड़ की एक टहनी पर टाँग दिया था। मैंने मन ही मन सोचा, "हम लोग चाँद को उस घोंसले में रखेंगे और पीरूबाबू, वसन्ता और मैं उससे खेलेंगे!"

मैंने आसमान की तरफ देखा। तारों के बीच चाँद चकमक पत्थर की तरह चमक रहा था।
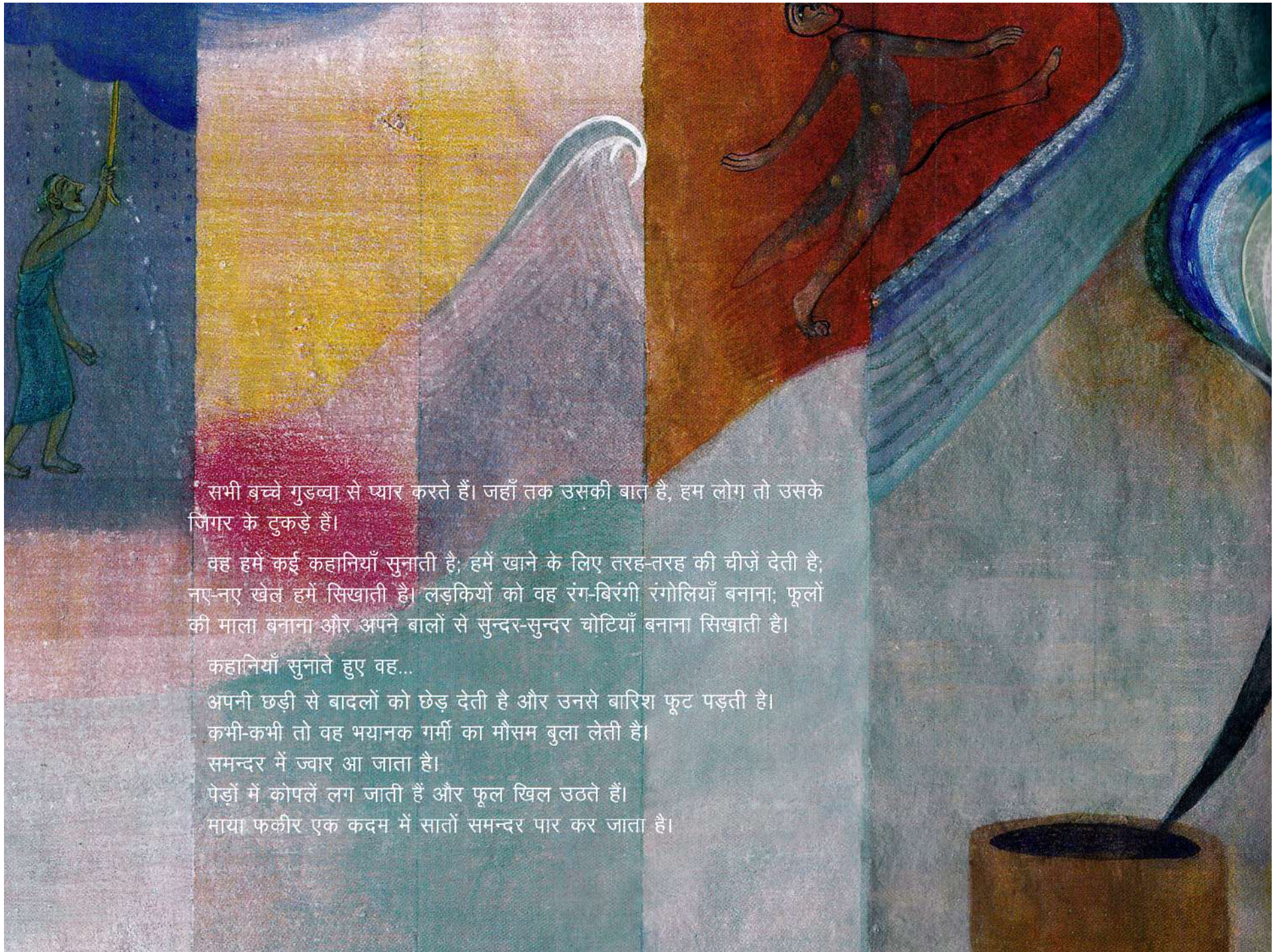
सभी बच्चे गुडव्वा से प्यार करते हैं। जहाँ तक उसकी बात है, हम लोग तो उसके जिगर के टुकड़े हैं।

वह हमें कई कहानियाँ सुनाती है; हमें खाने के लिए तरह-तरह की चीज़ें देती है; नए-नए खेल हमें सिखाती है। लड़कियों को वह रंग-बिरंगी रंगोलियाँ बनाना; फूलों की माला बनाना और अपने बालों से सुन्दर-सुन्दर चोटियाँ बनाना सिखाती है।

कहानियाँ सुनाते हुए वह...

अपनी छड़ी से बादलों को छेड़ देती है और उनसे बारिश फूट पड़ती है।
कभी-कभी तो वह भयानक गर्मी का मौसम बुला लेती है।
समन्दर में ज्वार आ जाता है।
पेड़ों में कोपलें लग जाती हैं और फूल खिल उठते हैं।
माया फकीर एक कदम में सातों समन्दर पार कर जाता है।

एक दिन उसने हमें बताया कि उसने अपने एक बाल से सातों समन्दरों को बाँध दिया और उनको घर लाकर हमारे कुएँ में उड़ेल दिया।

पहले तो मुझे उस पर यकीन नहीं हुआ। "मैं हरे पत्ते की कसम खाकर कहती हूँ। अगर तुमको मेरी बात पर विश्वास नहीं है तो ये कुएँ का पानी है, इसे पीकर बताओ कि ये नमकीन है कि नहीं," उसने कहा। मैंने वह पानी पी लिया। वह इतना नमकीन था कि मैंने उसे तुरन्त उगल दिया। "ठीक है। मैंने तुम्हारी बात मान ली," मैंने अपना मुँह बनाते हुए कहा। उसने मुझे अपनी तरफ खींचकर मेरे बालों पर अपना हाथ फेरते हुए कहा, "कितना सीधा है मेरा पोता!" और मुझे चूम लिया। मैं उसकी बातों में आ जाता था मगर मेरे भाई-बहन नहीं। वे उसकी चाल में नहीं फँसते थे।

राक्षस शोर मचाते उसकी तरफ आते थे, लेकिन गुडव्वा के हाथ की छड़ी देखी नहीं कि वे अपनी जान बचाने के लिए भाग खड़े होते!

वहीं दूसरी तरफ, देवता उसे स्वर्ग में आमंत्रित करते और ऐसे आसन पर बिठाते जो बिलकुल भगवान के आसन की तरह था।

खुद भगवान भी उससे कहानियाँ सुनाने को कहते।

जब हमारी गुडव्वा कहानियाँ सुनाती है तो चिड़िया और जानवर सब कुछ भूल बिलकुल मगन होकर उसे सुनते हैं।

हाथ में चाँदी मढ़ी हुई छड़ी लिए वह कभी-कभार किसी जादूगरनी-सी दिखती है।

छड़ी मुगदर बन जाती है
तीर बन जाती है
हँसिया बन जाती है
बाँसुरी बन जाती है।

वह उस छोटी-सी छड़ी से किस तरह खेलती है और कितने कमाल की कहानियाँ सुनाती है!

"हमारी गुडव्वा ने भला यह सब कहाँ सीखा?" मुझे तो यह कभी समझ ही नहीं आया।

यह है हमारे गुडव्वा की कहानी।

दूधिया पहाड़ चाँदनी की बारिश में भीग रहा था।

यूकेलिप्टस की पत्तियों पर गिरती चाँदनी कतरा-कतरा हमारे ऊपर बरस रही थी।

हम सब चाँदनी की उस बारिश में भीग गए थे।

सभी बच्चे गुडव्वा के चारों तरफ इकट्ठे हो गए। सक्कूपिनम्मा चाची भिगोए हुए लौकी के बीज लेकर हमारे साथ बैठ गई। हर एक बीज़ उनके मुँह में धीरे-धीरे पिस रहा था। गुडव्वा ने ताज़े चने और गुड़ से लड्डू बनाकर हम सबको एक-एक लड्डू दिया।

फिर सक्कूपिनम्मा ने पूछा, "ये बच्चे तुमको इतने प्यारे हैं। तुम इनके खाने-पीने के लिए तरह-तरह की चीज़ें बनाती हो। इनको कहानियाँ सुनाती हो। इनके साथ खेलती हो। इनको हँसाती हो। इनकी खुशी में खुश होती हो। जब ये बीमार पड़ते हैं तो अपने मुँह में दाना मुश्किल से डालती हो। मुझे बताओ कि तुमको ये इतने पसन्द क्यों हैं?"

"अरे मूरख! चाँद किसे नहीं अच्छा लगता! आसमान में तो बस एक चाँद है लेकिन मेरे आसपास देखो कितने बैठे हुए हैं," उसने हमारी तरफ इशारा करते हुए कहा। मैंने देखा कि ऐसा कहते हुए उसकी आँखों में कोमल व ठण्डी चाँदनी बरस रही थी।

मैंने उससे नारियल की दुल्हन की कहानी सुनाने को कहा। पीरूबाबू ने लोमड़ी और सूअर की कहानी की फरमाइश की। लच्छूमक्का ने खोखली लौकी और भेड़े की कहानी सुनाने को कहा। लेकिन गुडव्वा हमारी फरमाइश की कोई कहानी नहीं सुनाने वाली थी।

"मैं आज एक नई कहानी सुनाऊँ? सुनोगे तुम लोग?" उसने हमसे पूछा।

हमने सिर हिलाकर हामी भरी।

गुडव्वा ने कहानी कहना शुरू किया। वसन्ता उसकी गोद में बैठकर सुनने लगी।

एक बार की बात है, आकाश माता के दो बेटे थे। बड़े बेटे का नाम सूरज के ऊपर सुरन्ना था और छोटेवाले का नाम चाँद के ऊपर चन्द्रन्ना। उनका पिता नहीं था। आकाश माता ने उनको बड़े लाड़-प्यार से खुद ही पाला-पोसा। उन्होंने उनको बहुत सारे हुनर सिखाए। एक दिन उसके दोनों बेटे उसके पास आए और कहा, "माँ, हमें दुनिया घूमने की इजाज़त दो।" यह सुनकर आकाश माता रोते हुए बोली, "तुम दोनों मेरी आँखों की रोशनी हो! अगर तुम्हीं चले गए तो मेरा खयाल कौन रखेगा?"

कहानी सुनते-सुनते सक्कूपिनम्मा की आँखें भर आईं। उसने अपनी नाक साफ की और अपनी साड़ी के पल्लू से अपनी आँखों के आँसू पोंछ लिए।

सुरन्ना और चन्द्रन्ना ने कहा, "हमारी शिक्षा-दीक्षा तभी काम आएगी जब हम देश-दुनिया घूमें। हम कसम खाते हैं कि एक साल में लौट आएँगे। तो कृपा करके हमें आशीर्वाद देकर जाने दो।"

आकाश माता ने कहा, "ठीक है, अब तुम लोग जाना ही चाहते हो तो जाओ, मैं तुम्हें क्योंकर रोकूँगी? जाओ। मगर ठीक से जाना। जब लौटना तो अपने चाचा की बेटियों, पगतम्मा (दिन) और रेयम्मा (रात) से शादी करके खुशी-खुशी रहना।"
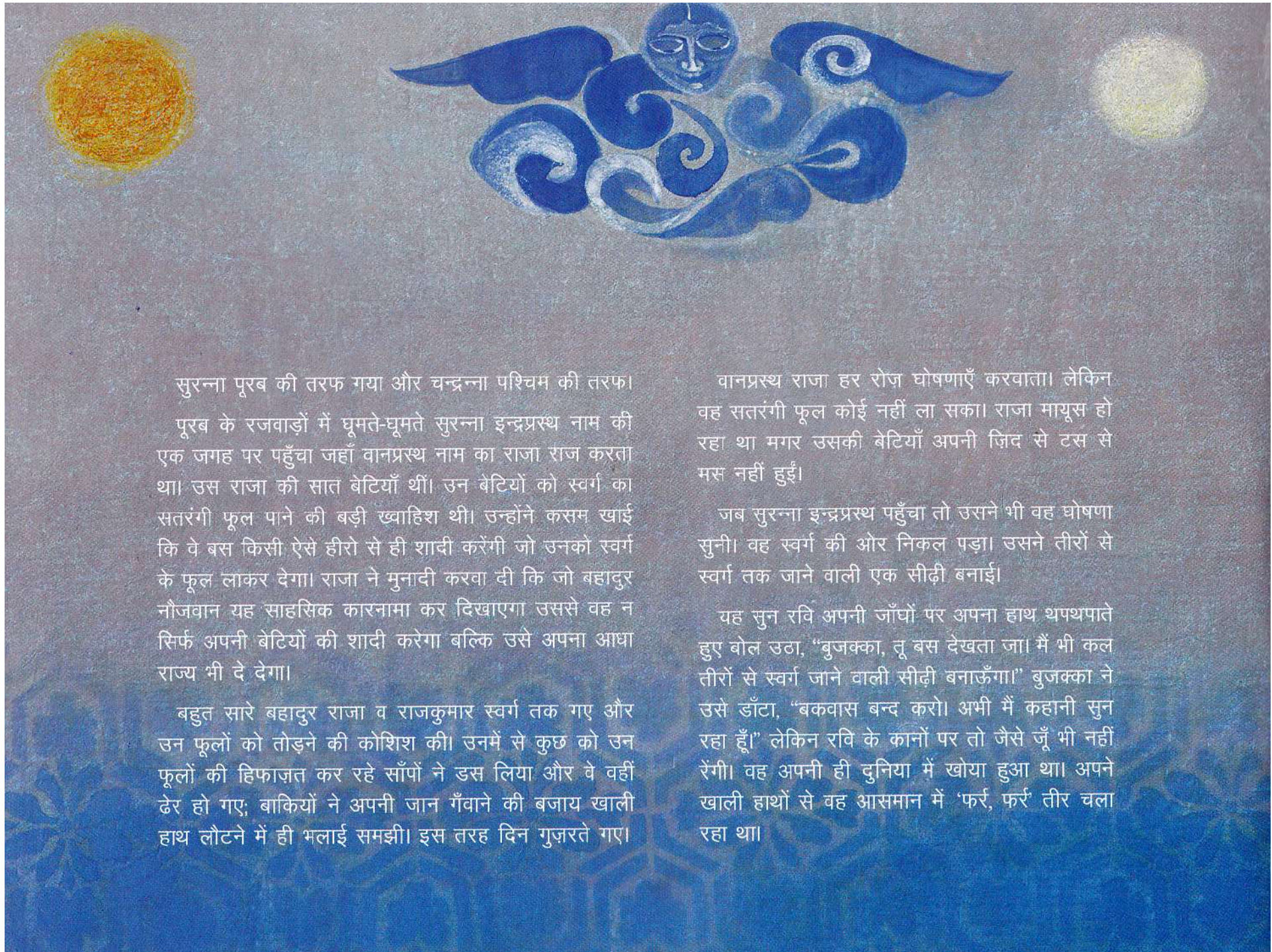
सुरन्ना पूरब की तरफ गया और चन्द्रन्ना पश्चिम की तरफ।

पूरब के रजवाड़ों में घूमते-घूमते सुरन्ना इन्द्रप्रस्थ नाम की एक जगह पर पहुँचा जहाँ वानप्रस्थ नाम का राजा राज करता था। उस राजा की सात बेटियाँ थीं। उन बेटियों को स्वर्ग का सतरंगी फूल पाने की बड़ी ख्वाहिश थी। उन्होंने कसम खाई कि वे बस किसी ऐसे हीरो से ही शादी करेंगी जो उनको स्वर्ग के फूल लाकर देगा। राजा ने मुनादी करवा दी कि जो बहादुर नौजवान यह साहसिक कारनामा कर दिखाएगा उससे वह न सिर्फ अपनी बेटियों की शादी करेगा बल्कि उसे अपना आधा राज्य भी दे देगा।

बहुत सारे बहादुर राजा व राजकुमार स्वर्ग तक गए और उन फूलों को तोड़ने की कोशिश की। उनमें से कुछ को उन फूलों की हिफाज़त कर रहे साँपों ने डस लिया और वे वहीं ढेर हो गए; बाकियों ने अपनी जान गँवाने की बजाय खाली हाथ लौटने में ही भलाई समझी। इस तरह दिन गुज़रते गए।

वानप्रस्थ राजा हर रोज़ घोषणाएँ करवाता। लेकिन वह सतरंगी फूल कोई नहीं ला सका। राजा मायूस हो रहा था मगर उसकी बेटियाँ अपनी ज़िद से टस से मस नहीं हुईं।

जब सुरन्ना इन्द्रप्रस्थ पहुँचा तो उसने भी वह घोषणा सुनी। वह स्वर्ग की ओर निकल पड़ा। उसने तीरों से स्वर्ग तक जाने वाली एक सीढ़ी बनाई।

यह सुन रवि अपनी जाँघों पर अपना हाथ थपथपाते हुए बोल उठा, "बुजक्का, तू बस देखता जा। मैं भी कल तीरों से स्वर्ग जाने वाली सीढ़ी बनाऊँगा।" बुजक्का ने उसे डाँटा, "बकवास बन्द करो। अभी मैं कहानी सुन रहा हूँ।" लेकिन रवि के कानों पर तो जैसे जूँ भी नहीं रेंगी। वह अपनी ही दुनिया में खोया हुआ था। अपने खाली हाथों से वह आसमान में 'फर्र, फर्र' तीर चला रहा था।
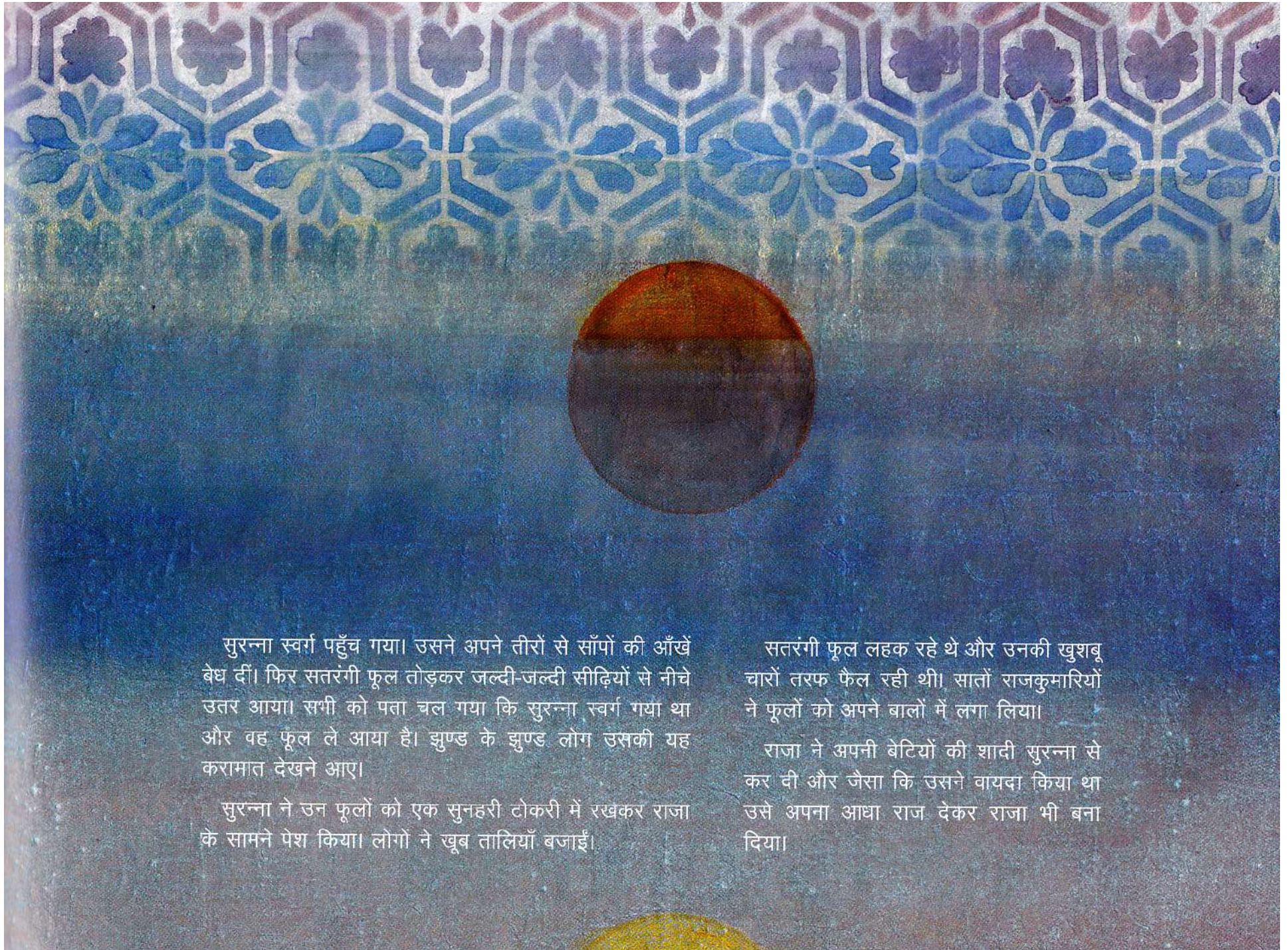
सुरन्ना स्वर्ग पहुँच गया। उसने अपने तीरों से साँपों की आँखें बेध दीं। फिर सतरंगी फूल तोड़कर जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से नीचे उतर आया। सभी को पता चल गया कि सुरन्ना स्वर्ग गया था और वह फूल ले आया है। झुण्ड के झुण्ड लोग उसकी यह करामात देखने आए।

सुरन्ना ने उन फूलों को एक सुनहरी टोकरी में रखकर राजा के सामने पेश किया। लोगों ने खूब तालियाँ बजाईं।

सतरंगी फूल लहक रहे थे और उनकी खुशबू चारों तरफ फैल रही थी। सातों राजकुमारियों ने फूलों को अपने बालों में लगा लिया।

राजा ने अपनी बेटियों की शादी सुरन्ना से कर दी और जैसा कि उसने वायदा किया था उसे अपना आधा राज देकर राजा भी बना दिया।

और जबकि इधर यह सब चल रहा था...

...दूसरी तरफ चन्द्रन्ना, जो घोड़े पर सवार हो पश्चिम की तरफ़ गया था, एक बहुत ही घने जंगल में पहुँच गया। जंगल इतना घना था कि उसमें कदम रखना भी बड़ा मुश्किल था। वहाँ एक साधू तपस्या कर रहा था। उसकी एक सुन्दर बेटी थी। एक ब्रह्मराक्षस उसकी बेटी से शादी करने के लिए उसे परेशान कर रहा था। एक दिन जब वह साधू घर पर नहीं था तब राक्षस ने उसकी बेटी को अगवा करके सात समन्दर पार एक बरगद के पेड़ के तने में छिपा दिया। साधू बड़ा परेशान हुआ। उसी समय

चन्द्रन्ना को बहुत प्यास लगी। अपनी प्यास बुझाने वह साधू के आश्रम पहुँच गया। साधू ने पानी देकर उसकी प्यास बुझाई। यह भाँपकर कि साधू किसी बात से परेशान है चन्द्रन्ना ने उससे पूछा, "साधू महाराज! आप इतने परेशान क्यों दिख रहे हैं?" साधू ने उसको अपनी आपबीती सुना दी। उसने चन्द्रन्ना से कहा, "तुम तो राजकुमार जैसे दिखते हो। अगर तुम मेरी बेटी को उस भयानक राक्षस से बचा लोगे तो उसकी शादी मैं तुमसे कर दूँगा।"

चन्द्रन्ना अपने घोड़े पर सवार हो निकल पड़ा। उसने सात समन्दर पार किए और उस बरगद के पेड़ के पास पहुँच गया। भयंकर राक्षस उसकी तरफ झपटा...

गुडव्वा की गोद में बैठी वसन्ता डर के मारे उससे चिपक गई। "मुझे तो बहुत डर लग रहा है," चिल्लाते हुए रवि घर में घुस गया। वह दरवाज़े के पीछे खड़े हो अपने कान बाहर निकालकर बाकी की कहानी सुनता रहा।

चन्द्रन्ना हवा में उछलकर राक्षस के ऊपर कूद पड़ा। राक्षस ने उसको ज़मीन पर पटक दिया। लेकिन चन्द्रन्ना उठा और धूल झाड़कर राक्षस की तरफ बढ़ा। राक्षस ने इमली का एक पेड़ उखाड़ा और चन्द्रन्ना की तरफ फेंका। लेकिन चन्द्रन्ना ने झुककर खुद को बचा लिया। उसने बरगद का एक पेड़ उखाड़ा और उसे राक्षस पर दे मारा। राक्षस ने पलटकर उस पर एक चट्टान फेंकी। जवाब में चन्द्रन्ना ने एक पूरा का पूरा पहाड़ ही उसकी तरफ फेंका। इस तरह यह भयंकर लड़ाई एक हफ्ते चलती रही। अन्त में चन्द्रन्ना ने राक्षस का गला मरोड़कर उसे मार डाला। वह विशालकाय राक्षस "लल्लाल्ला..." की आवाज़ निकालता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा।
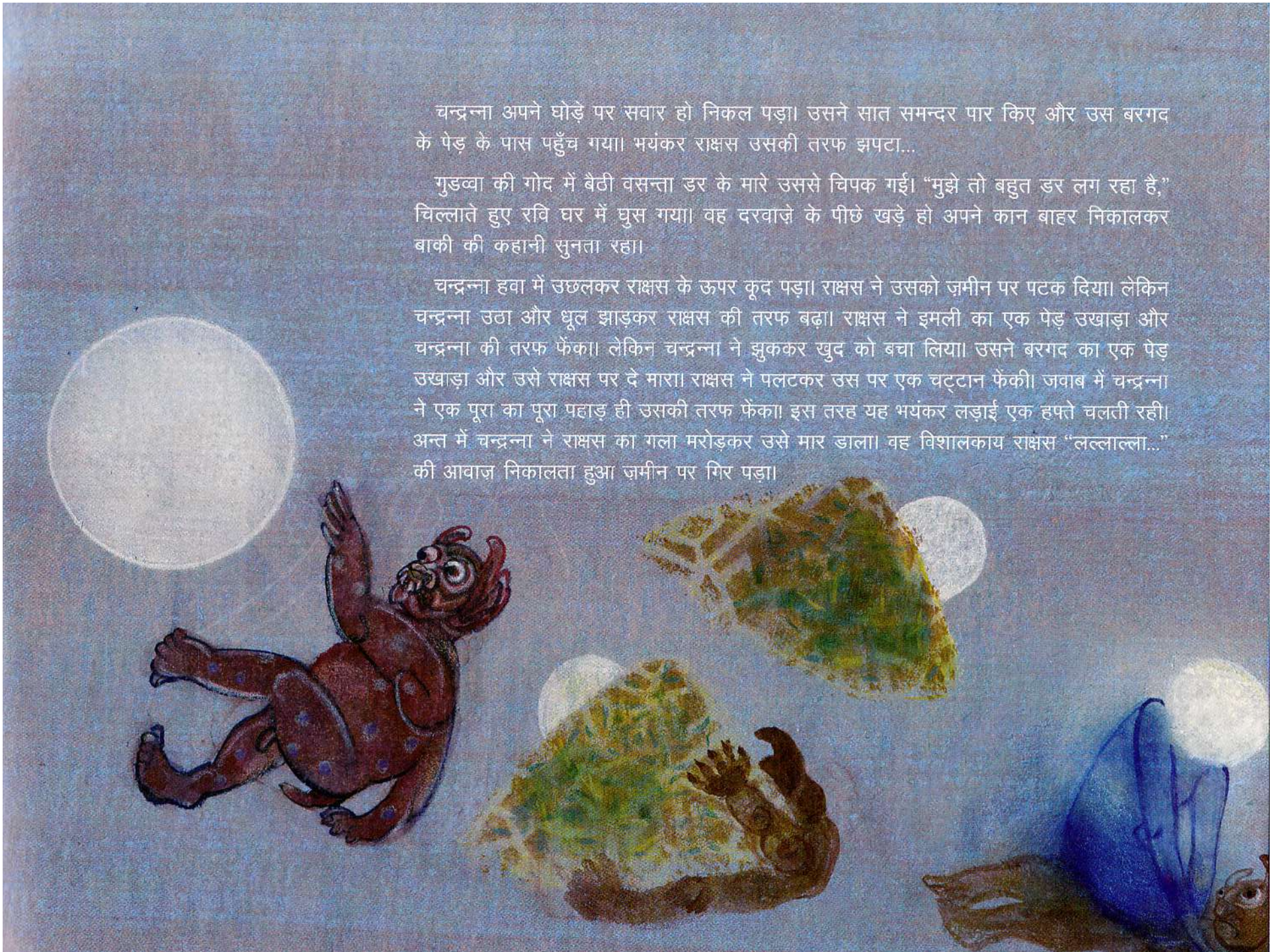
साधू ने चन्द्रन्ना से अपनी बेटी की शादी कर दी।

इसके बाद रवि दरवाज़े के पीछे से निकलकर हमारे साथ आकर बैठ गया।

दोनों बेटे अपनी-अपनी बीवियों के साथ अपनी माँ के पास लौट आए। उन्होंने अपने चाचा की बेटियों से भी शादी कर ली। सुरन्ना ने पगतम्मा से और चन्द्रन्ना ने रेयम्मा से।

तभी से चन्द्रन्ना 15 दिन रेयम्मा के साथ रहता है और बाकी के 15 दिन साधू की बेटी के साथ...यही कारण है कि 15 दिन हमें चाँदनी मिलती है और 15 दिन नहीं मिलती।

इसी तरह कुछ दिन गुज़र गए।

एक बार आकाश माता बहुत बीमार पड़ी। हकीम ने कहा कि समुद्र मन्थन से जो छाछ निकलती है अगर वह पीने को मिले तभी वह बचेगी। दोनों भाइयों ने चाँदी के पहाड़ों से मथनी बनाई और समन्दर को मथने लगे। वे दो मटकों में भरकर छाछ ले आए।

चन्द्रन्ना सीधे अपनी माँ के पास गया।

सुरन्ना पहले अपनी सात रानियों के पास गया। उन सातों को पगतम्मा बिलकुल पसन्द नहीं थी। वे अपनी सास यानी सुरन्ना की माँ को भी पसन्द नहीं करती थीं क्योंकि वह पगतम्मा को बड़ी रानी मानती थी। सो, उन्होंने सुरन्ना से नज़रें बचाकर छाछ में मिर्ची पाउडर मिला दिया।

जब आकाश माता ने चन्द्रन्ना की दी छाछ पी तो उसके पेट को ठण्डक पहुँची। उसने उसे दुआएँ दीं, "चन्द्रन्ना, तुम्हारे दिए ठण्डे छाछ ने मुझे चंगा कर दिया है। मैं आशीर्वाद देती हूँ कि तुम और तुम्हारी बीवी रेयम्मा हमेशा शान्त रहोगे। अपने शीतल हाथों से तुम दुनिया पर चाँदनी बरसाओगे। सभी तुमको पसन्द करेंगे।"

फिर उसने सुरन्ना के मटके से छाछ पी। उसको लगा मानो उसके पेट में आग लग गई हो। वह सुरन्ना को शाप देने लगी, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे पेट में आग झोंकने की। तुम और तुम्हारी बीवियाँ हमेशा जलते रहोगे। सभी तुम्हारी तरफ देखकर कहेंगे, 'अरे कैसी तपती धूप है!' और तुमको कोसेंगे।"

यह सुनकर सुरन्ना की बीवियाँ आकाश माता के पाँवों पर गिर पड़ीं और माफी माँगने लगीं।

"अच्छा! तो यह तुम लोगों की करतूत है। मैंने अपने नेक बेटे को नाहक शाप दिया। अब तुम लोगों ने मुझे जितना कष्ट दिया है उससे दोगुना तुम्हें भोगना होगा। तुम सब एक-दूसरे से नफरत करोगी। तुम सभी अलग-अलग रहोगी। सुरन्ना पगतम्मा के साथ अकेला रहेगा। केवल जब बरसात होगी तब तुम लोग साथ मिलकर सुरन्ना के साथ रह सकोगी।" इस तरह आकाश माता ने अपनी सात बहुओं को शाप दे दिया।

"बच्चों, तुमने इन्द्रधनुष देखा है क्या? जब बारिश होती है, तब इन्द्रधनुष बनता है। उसमें सात रंग होते हैं। ये सात रंग वही सात रानियाँ हैं जो बारिश के समय ही साथ आती हैं।"

"अच्छा! इसीलिए कहा जाता है कि माँ का शाप ज़रूर लगता है।" सक्कूपिनम्मा ने एक प्रचलित कहावत के बारे में कहा।

अपने बेटे को गलती से शाप देने के कारण आकाश माता को बहुत बुरा लग रहा था। "मैंने अपने निर्दोष बच्चे को शाप दे दिया। कैसी माँ हूँ मैं! कैसी पत्थरदिल औरत हूँ मैं। अब तो जीने का मन नहीं कर रहा। क्यों न उस पहाड़ी से कूदकर जान दे दूँ।" यह सोच आकाश माता तेज़ कदमों से उस पहाड़ी पर चढ़ गई और कूदने को तैयार हो गई।

ठीक उसी समय अपने रथ में बैठ उधर से गुज़र रहे पार्वती और भगवान परमेश्वर ने उसे देखा। "भगवन! रथ को रोकिए।

वहाँ एक औरत खड़ी है जो लगता है कि पहाड़ी से कूदने जा रही है," पार्वती ने कहा।

शिव ने पार्वती को डाँटते हुए कहा, "औरतों के साथ यही समस्या है। अरे उसे कूदकर मरने दो। हमें इससे क्या? चुपचाप चलो यहाँ से।"

इस पर पार्वती अपने पति पर भड़क गई, "तुम भगवान हो या शैतान? सभी मर्द ऐसे ही होते हैं! जब तुमको हमारी ज़रूरत होती है तो हम पर गहने-ज़ेवर की बरसात कर दोगे लेकिन जैसे ही ज़रूरत खत्म हमें किनारे फेंक दोगे। साँप जैसे ज़हरीले हो तुम लोग!"

"मैंने कुछ कहा नहीं कि तुम लड़ने को तैयार रहती हो। अपने गले में साँप पहनने में कोई खतरा नहीं लेकिन किसी औरत को मंगलसूत्र पहनाना बहुत खतरनाक होता है," बड़बड़ाते हुए शिव ने रथ को ज़मीन पर उतारा।

पार्वती ने आकाश माता के पल्लू को पकड़कर उनको पहाड़ से कूदने से रोका। पार्वती और परमेश्वर को देखकर आसमान माता फूट-फूटकर रोने लगी। उसने उनको सारी कहानी सुना दी। तब उन्होंने कहा, "इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं। न ही तुम्हारे बेटे की। यह सब तो हमारी लीला है। तुम्हारा बड़ा बेटा धरती के सभी जीवों को धूप देगा और छोटा बेटा चाँदनी। हम तो अदृश्य ईश्वर हैं। लेकिन तुम्हारे बेटे वो ईश्वर हैं जिनको सभी देख सकते हैं।" यह कहकर पार्वती और शिव अपने रथ पर बैठ वहाँ से चले गए। आकाश माता अपने घर चली गई।

"यह कहानी यहीं खत्म होती है। अब घर चलते हैं," गुडव्वा ने कहा।

एक-एक कर के सभी जाने के लिए खड़े हुए।

इमली के पेड़ की टहनी पर बैठा सारस उठा और अपने पंख फड़फड़ाए। चारों तरफ दूधिया चाँदनी बरसने लगी।

"आता, बहुत रात हो गई है। मुझे घर जाना चाहिए," लौकी के बीजों से भरी कटोरी उठाते हुए सक्कूपिनम्मा ने कहा।

रेड्डी अपनी माँ के पीछे हो लिया।

सभी बच्चे उठे, अपने कपड़ों पर लगी धूल झाड़ी और अपने-अपने घरों की ओर निकल पड़े। वसन्ता गुडव्वा की गोद में ही सो गई थी। पीरूबाबू ने उसे उठाकर अपने कन्धे पर रखा और मुझसे कहा, "चलो, घर चलते हैं।"

मैंने कहा, "मैं नहीं आऊँगा। मैं यहीं गुडव्वा के साथ सोऊँगा।"

पीरूबाबू वसन्ता को लेकर चला गया।

गुडव्वा ने छीली हुई फलियों को टोकरी में रखा। फिर वहाँ झाड़ू लगाकर दरी बिछाई और धान की भूसी से भरा तकिया निकाल लिया। मैं दरी पर लेट गया। गुडव्वा दीया बुझाकर मेरे बगल में लेट गई। उसने मुझे फटी चादर से ढँका और खुद को अपनी साड़ी से।

मेरी आँखों पर भूरी-भूरी चाँदनी पड़ रही थी।

ऐसा लग रहा था मानो चाँद छाछ में तैरता मक्खन का गोला हो। मैंने उसकी ओर देखा और कहा, "अब तुम देखते जाओ। मैं किसी न किसी तरह कल तुमको चुराकर रहूँगा।"

भोर में मुर्गे की बाग सुनकर मैं झटपट उठा।

गुडव्वा अपना घड़ा लेकर कुएँ से पानी भरने गई थी। उसने ज़रूर घिरनी से पानी खींचा होगा क्योंकि उसकी चरखियाँ अभी तक घूम रही थीं मानो वे हँस रही हों।

आसमान में चाँद नहीं था। ऐसा लग रहा था गुडव्वा ने उसे पहले ही रस्सी की टोकरी में लटक रहे मटके में छिपा दिया था। बिल्ली की तरह दबे पाँव मैं उस मटके के पास गया। मेरे लिए वह काफी ऊँचा बँधा हुआ था। मैं चने के बोरे पर चढ़ गया। दरवाज़े के बाहर झाँककर देख लिया कि कहीं गुडव्वा आ तो नहीं रही। फिर मैंने धीरे से वह मटका उठाया और उसे नीचे उतारा। नीचे झुककर मैंने मटके से ढक्कन हटाया।

ऐसा लगा मानो मुझ पर बिजली गिर गई हो...कुछ देर तो मुझे कुछ दिखाई ही नहीं दिया। मटके में लाखों दीयों की चमक थी। चाँद दमक रहा था।

मैं मटके में हाथ डालकर चाँद को उठाना चाहता था लेकिन वह मेरे हाथ से किसी मछली के बच्चे की तरह फिसल जाता था। अन्त में मैंने अपने हाथों से अंजुरी बनाई और उसे उठा लिया। मेरे हाथों में चाँदनी की गेंद बर्फ-सी महसूस हो रही थी। मैंने उसे चूम लिया। मेरे होंठों को उसकी ठण्डक महसूस हुई।

मेरा शरीर खुशी से झूमने लगा।

तभी मुझे गुडव्वा के कदमों की आहट सुनाई दी।

मैं जल्दी-जल्दी उठा और चाँद को अपने तकिए के नीचे छुपा दिया। फिर किसी मासूम बच्चे की तरह चादर खींच सो गया।
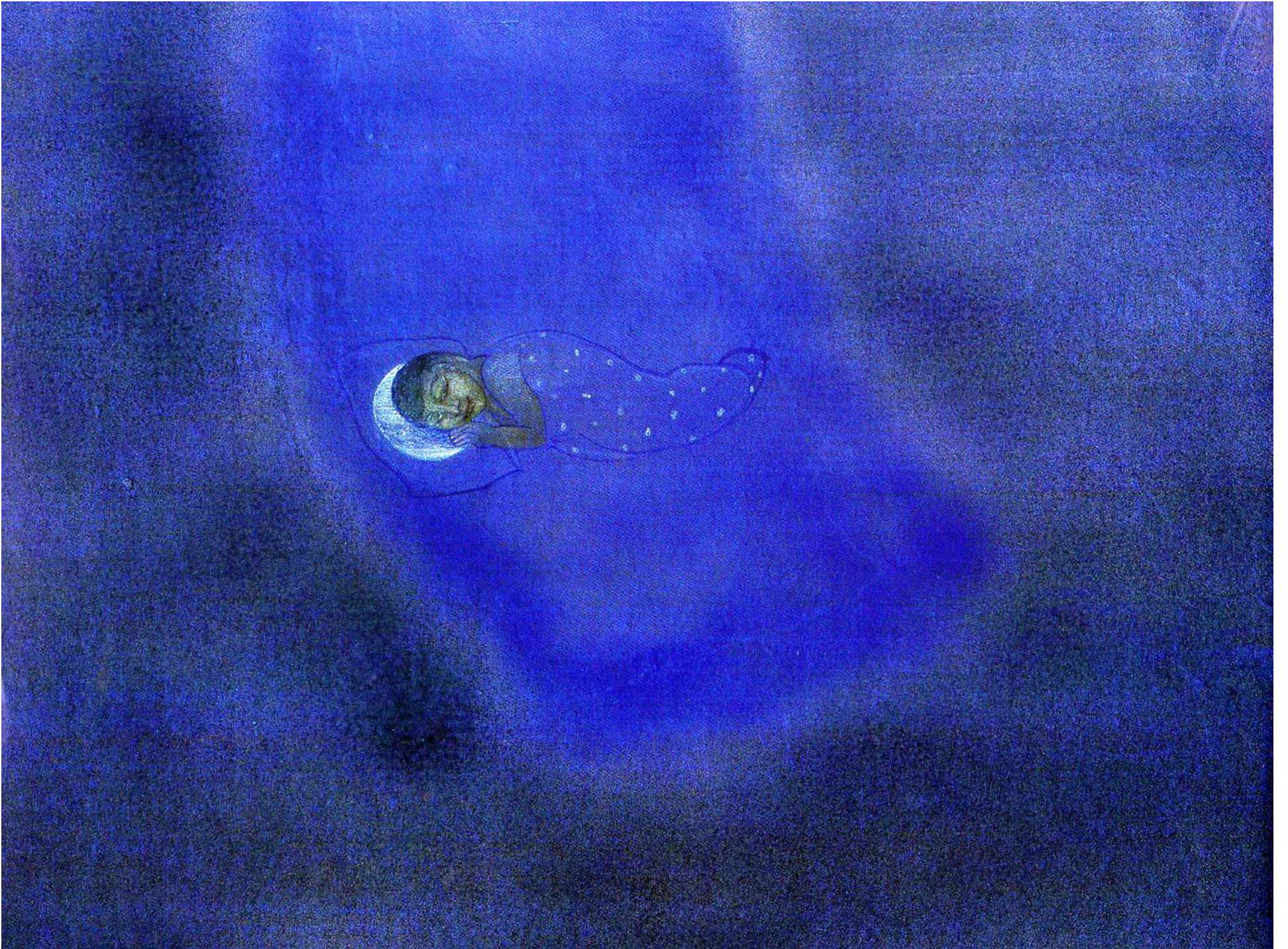
मटके में चाँद
MATKE MEIN CHAND

मूल तेलुगू कहानीः
गोपिनी करुणाकर

चित्र: नीलिमा शेख
डिज़ाइन: चिनन
अँग्रेज़ी से अनुवाद: लोकेश मालती प्रकाश
श्रृंखला सम्पादक: सुशील शुक्ल

Anveshi
डिफरेंट टेल्स: स्टोरीज़ फ्रॉम मार्जिनल कल्चर्स एंड रीजनल लैंग्वेज, हैदराबाद के अन्वेषी रिसर्च सेंटर फॉर विमेन्स स्टडीज की एक पहल।
अँग्रेजी तथा मलयालम में डीसी बुक्स, कोट्टायम, केरल द्वारा और तेलुगू में हैदराबाद के अन्वेषी रिसर्च सेंटर फॉर विमेन्स स्टडीज़ द्वारा प्रकाशित।

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
संस्करण: दिसम्बर 2020 (2000 प्रतियाँ)
कागज़: 90 gsm मेट आर्ट और 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-946518-3-3
मूल्य: ₹ 100.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउण्डेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल 462 026 (मप्र)
फोनः +91 755 297 7770-71-72-73
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

डिफरेंट टेल्स सीरीज़
की अन्य किताबें

सिर का सालन

फिर जीत गई ताटकी और दिलेर बड़ेय्या

बोरेवाला

स्कूल की अनकही कहानियाँ

दो नाम वाला लड़का तथा अन्य कहानियाँ

माँ

इतिहास की आत्माएँ

बूढ़ी गुडव्वा की ज़िन्दगी संघर्षों व तकलीफों से भरी हुई थी लेकिन
अपने पोते के लिए वह एक जादुई दुनिया बुनती है।
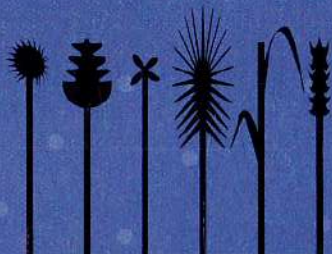
डिफरेंट टेल्स क्षेत्रीय भाषा की कहानियाँ ढूँढ-ढूँढकर निकालता है, ऐसी कहानियाँ जो ज़िन्दगी की बातें करती हैं – ऐसे समुदायों के बच्चों की कहानियाँ जिनके बारे में बच्चों की किताबों में बहुत कम पढ़ने को मिलता है। कई सारी कहानियाँ लेखकों के अपने बचपन का बयान करते हुए बड़े होने के अलग-अलग ढंगों को प्रस्तुत करती हैं, प्रायः एक प्रतिकूल दुनिया में जहाँ वे हमजोलियों, पालकों और अन्य वयस्कों से नए सम्बन्ध बनाते हैं। ज़ायकेदार व्यंजनों, छोटे-छोटे जुगाड़ू खेलों, स्कूल के अनापेक्षित सबकों और दिलदार दोस्तियों के माध्यम से ये कहानियाँ हमें एक दिलकश सफर पर ले जाती हैं।

मूल्य: ₹ 100.00